ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम्   विषय- हिन्दी

दिनांक—16/07/2020   **समास(पुनरावृत्ति)**

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

आज हम लोग, विभिन्न समासों में अंतर पढ़ेंगे, इसे आप अपनी कॉपी में शुद्ध- शुद्ध लिखें एवं याद करें तथा कॉपी जांच कराएँ, ग्रुप में भेज कर।

एन सी इ आर टी पर आधारित

विभिन्न समासों में अंतर

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर- कर्मधारय और बहुव्रीहि समास के अनेक उदाहरण समान होते हैं। इनमें अंतर स्पष्ट करने के लिए उनका विग्रह करके देखना चाहिए। कर्मधारय समास के दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमेय-उपमान का संबंध होता है, जबकि बहुव्रीहि समास में दोनों पद अप्रधान होते हैं,जो किसी तीसरे अथवा विशेष अर्थ की ओर संकेत करते हैं; जैसे-

***महात्मा**- महान है जो आत्मा (कर्मधारय समास)

***महात्मा**- महान है आत्मा जिसकी (बहुव्रीहि समास) विशेष्य-विशेषण संबंध।

***कमलनयन-** कमल जैसे नयन (कर्मधारय समास)

कमलनयन- कमल जैसे नयन हैं जिसके अर्थात श्रीकृष्ण (बहुव्रीहि समास)

*__नीलकंठ__ - नीला है जो कंठ

*__नीलकंठ__ - नीला है कंठ जिसका (शिव)

द्विगु समास तथा बहुव्रीहि समास में अंतर-

द्विगु समास का पहला पद संख्यावाची होता है। एक ही शब्द द्विगु समास अथवा बहुव्रीहि समास हो सकता है।

विग्रह करने पर पता चलता है कि यह कौन-सा समास है; जैसे-

*__चतुर्भुज__ - चार भुजाओं का समूह (द्विगु समास)।

*__चतुर्भुज – चार भुजाएं हैं जिसकी अर्थात विष्णु बहुव्रीहि समास।__

संधि और समास में अंतर-

संधि और समास दोनों में नए शब्दों का निर्माण होता है, परंतु

(क)संधि में वर्णों का मेल होता है; जबकि समास में शब्दों का।

(ख)संधि में वर्णों के मेल से वर्ण-परिवर्तन भी हो जाता है, परंतु समास में प्रायः ऐसा नहीं होता।

(ग)समास में कुछ पदों के बीच कारक की विभक्तियों (परसर्गों) या समुच्चयबोधकों (और तथा एवं अथवा या) का लोप भी हो जाता है।

(घ) संधिस्थ शब्दों को तोड़ने की क्रिया को सन्धि-विच्छेद कहते हैं ; जबकि समास में समस्तपदों को तोड़ने की क्रिया को 'विग्रह' कहते हैं।

धन्यवाद

पिंकी कुसुम